हिन्दी विभाग , चिन्मय विद्यालय , बोकारो से प्रकाशित त्रैमासिक ई - पत्रिका अप्रैल 2022 , अंक - 13

नयी सुबह

हम बच्चों की ..

ॐ

चिन्मय विद्यालय , बोकारो

संपादक मंडल -:

ज्योति दुबे

आरती कुमारी

तकनीकी एवं सम्पादन समूह :

अंकित सारंगी

अनिकेत जयसवाल

इप्शिता तिवारी

हर्षित सिंह

सम्पादन सहयोग एवं अंक - सज्जा :

अंशु उपाध्याय

संपादकीय विभाग : -

हिन्दी विभाग

चिन्मय विद्यालय , बोकारो

झारखंड 827006

इस अंक में

गुरु ध्यानम	03
संपादक की कलम से	04
तरबूज सेवन के नियम	05
साक्षात्कार	06
नागार्जुन	07
मेरे पापा	08
आओ चलें	09
मेरी माँ	10
सूडोकू	11
परछाईयों की कलाकार	12
कौन सुखी	13
शब्द निर्झर	14
मूर्ख किसान	15
परिस्थिति से जीत	16
बूझो पहेली	17
जल ही जीवन है	18

गुरु ध्यानम्

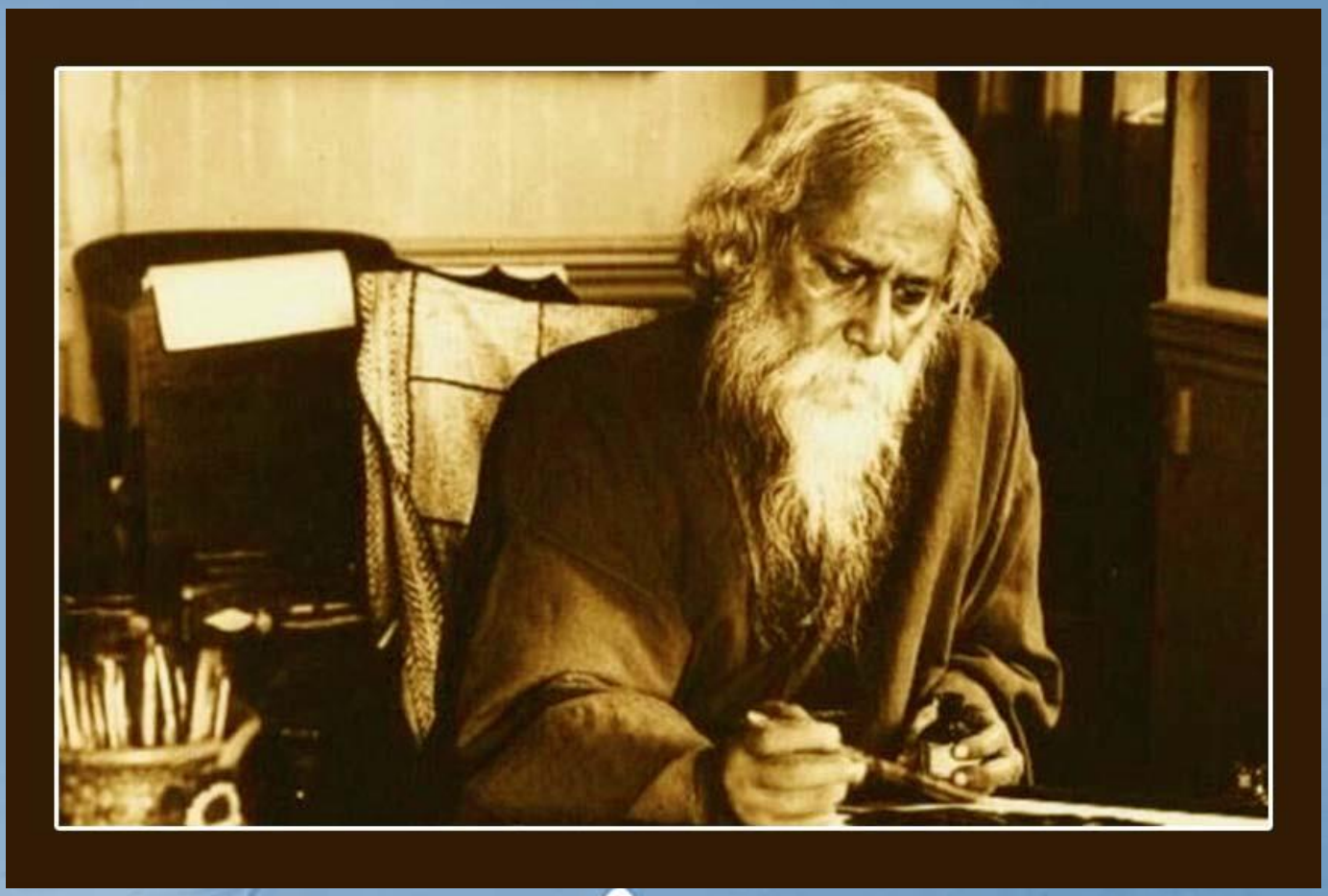

तितली महीने नहीं क्षण गिनती है,

और उसके पास पर्याप्त समय होता है ।

रवींद्र नाथ टैगोर (जन्म - 7 मई 1861)

संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों,

एक लंबे इंतजार के बाद आपका विद्यालय आना और अपने मित्रों, शिक्षकों आदि से मिलना बड़ा ही उत्साह पूर्ण एवं सुखद लग रहा होगा। इसके साथ ही अपनी पढ़ाई-लिखाई के लिए कमर कसनी होगी क्योंकि 2 वर्षों के अंतराल में हमने बहुत कुछ पाया और बहुत कुछ खोया।अतः क्षतिपूर्ति का लेखा जोखा तो नहीं परंतु पुनः पुराने दिनों सा सबकुछ पटरी पर लाना है। गर्मियों की छुट्टियां आने वाली हैं इसके साथ अति गर्मी, बीमारी आदि परेशानियों को सहन-वहन करते हुए भी अपनी पढ़ाई को सुचारू रूप से चलाएं। इस त्रैमासिक पत्रिका को पढ़ें आनंद उठाएं और इसमें अपनी रचनाएँ देकर सहभागिता दिखाएं। इसके द्वारा आप अपनी-अपनी भावाभिव्यक्ति सबों तक पहुंचाएं।

अपना तथा अपने परिवार का ध्यान रखें।

मुस्कुराते रहें।

धन्यवाद

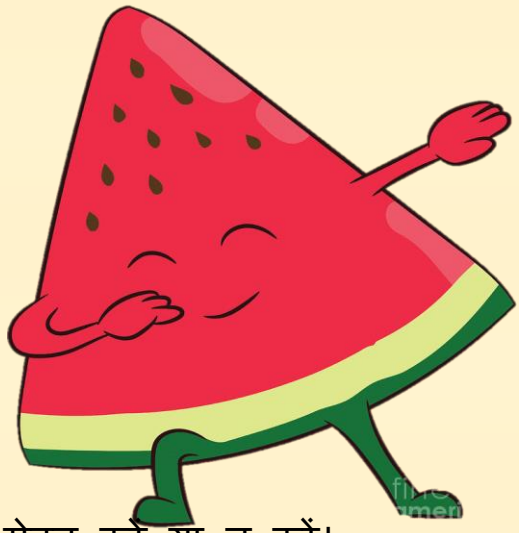

तरबूज सेवन के नियम

गलत तरीके से खाया तरबूज आपको हॉस्पिटल पंहुचा सकता है।

- खाली पेट तरबूज का सेवन न करें, और करना पड़े तो बिना नमक न करें।
- जुकाम,नजला रोगी इसका सेवन न करें।
- अस्थमा, हार्ट और शुगर ,किडनी रोगी बहुत कम मात्रा में सेवन करें या न करें। इसमें एमिनो एसिड अस्थमा और पोटेशियम हार्ट वालो को थोड़ी दिक्कत कर सकता, शूगर का लेवल बढ़ाता है।
- तरबूज के बाद कोई भी लिक्विड न लें। पानी तो किसी हालत में न पियें जान पर बन आएगी|
- चावल और तरबूज विरुद्ध आहार है, इनके बीच 3 घण्टे का गैप रखें।
- रात के समय भी तरबूज बिलकुल न खाए।
- धुप में तपा हुआ तरबूज पानी में रखकर गर्मी निकाल दें तब खाए| गरम तरबूज बिलकुल न खाए|
- तरबूज काटकर तुरंत खाए| कटा तरबूज फ्रिज में भी न रखें| चिल्ड तरबूज खाने का मन हो तो साबुत फ्रिज में रखे| या बर्फीले पानी में साबुत रखें| फिर खाए|
- मार्केट का कटा खुला बिकने वाला तरबूज किसी हालत में न खाएँ!

इप्शिता तिवारी

कक्षा -8 अ

साक्षात्कार

सेवानिवृत प्राचार्य - श्री विपिन बिहारी मिश्र

शरण्या- हरि ओम! सर,आपने हमें मिलने का समय दिया।
बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं शरण्या चिन्मय विद्यालय, बोकारो के कक्षा अष्टम डी की छात्रा हूं। सर,अपने जीवन के बारे में हमें कुछ बताएं।

प्राचार्य- शरण्या, मुझे खुशी हुई कि तुम कुछ जानने की जिज्ञासा से आई हो। मेरा नाम विपिन बिहारी मिश्र है। मैं बोकारो इस्पात विद्यालय में प्राचार्य के पद से अवकाश प्राप्त किया हूं।

शरण्या- सर,एक प्राचार्य के रूप में शिक्षक अभिभावक और छात्र के बारे में आपका अनुभव कैसा रहा?

प्राचार्य- अच्छा प्रश्न उठाई हो - शिक्षक,छात्र,अभिभावक शिक्षा के तीन स्तंभ है। इन तीनों का दायित्व बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक का भाव गुरु का होना चाहिए जो अपने शिष्य को अधिक से अधिक प्यार करते हुए अपने ज्ञान उन्हें प्रदान करें।

शरण्या- पर सर, पढ़ाई तो अभी व्यापार का रूप लेते जा रही है। इस बारे में आपकी क्या राय है?

प्राचार्य- शरण्या, कुछ हद तक तुम सही कह रही हो कि कुछ लोग इससे पैसे कमाना का माध्यम बना लिए हैं। पर मेरा अनुभव कहता है अभी भी ऐसे शिक्षक हैं जो ईमानदारीपूर्वक अपना ज्ञान बच्चों को देते हैं। मेरे समक्ष गुरु शिष्य परंपरा अभी भी जीवित है।

नागार्जुन - यथार्थ चेतना एवं लोक दृष्टि :

नागार्जुन प्रगतिवादी कवियों मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रख लिया और इसी नाम से इनकी काव्य रचनाएँ प्रसिद्ध हैं । नागार्जुन राहुल सांकृत्यायन एवं निराला जी से बेहद प्रभावित थे । राजनीतिक रूप से ये साम्यवादी विचारधारा के कवि थे । यही कारण है की इनकी कविताओं में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है । इन्होंने जीवन के संघर्ष - कष्ट आदि की अनुभूतियों से लेकर सहजता , आक्रोश , भ्रष्टाचार , अखंडता , मजदूर, किसानों की लाचारी पर खूब लिखा है । इनकी कविताओं मैं मानवीय पीड़ा का स्वर स्पष्ट दिखाई देता है । आधुनिक हिन्दी के कबीर कहे जाने वाले नागार्जुन ने प्रचंड आत्मविश्वास के साथ समाज में उभरने वाली विसंगतियों पर चोट की है । उन्होंने हमेशा जनता का पक्ष लिया। राजनीतिक व्यंग्य उनकी कविताओं का सबसे प्रमुख हिस्सा है जिस तरह कबीर ने अनभय साँचा और घर फूँक मस्ती की आक्रामकता लेकर अपने समय की ताकतों पर चोट की , वैसे ही नागार्जुन ने भी की । उन्होंने अपनी मार्क्सवादी चेतना के आधार पर गाँधी का भी विरोध किया , नेहरू का भी एवं इंदिरा गाँधी का भी और वोटतंत्र पर टिकी निर्लज्ज राजनीति का भी । सामाजिक विषमता एवं आर्थिक असमानता को नागार्जुन कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं

1. खादी ने चुपचाप मलमल से साँठ - गाँठ कर डाली है ।
   बिड़ला , टाटा , डालमिया की तीसों दिन दिवाली है । ।
2. भीतर भीतर विकट कसाई ' बाहर खद्दरधारी ' ।
3. कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त ,
   कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।
   कई दिनों तक चूल्हा रोया , चक्की रही उदास ,
   कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास ।

नागार्जुन सत्ता व्यवस्था एवं भ्रष्ट सरकार तंत्र के खिलाफ आवाज उठाते हैं। गरीब मजदूरों, कृषकों की समस्याओं को देखकर वे व्याकुल हो जाते हैं । गरीब मजदूर एक समय भर पेट खाना नहीं खा पाता वहीं पूंजीपति बड़ी - बड़ी पार्टियों मे ढेरों प्लेट खाना बर्बाद करता है । उच्च वर्ग भोग - विलास आदि में धन बर्बाद करते हैं । ऐसे भारत की तस्वीर नागार्जुन पेश करते हैं ।

ज्योति कुमारी

शिक्षिका

मेरे पापा

यूं तो जिंदगी में बहुत से रिश्ते देखे हैं,
पर मेरे पापा के सामने वो सारे फीके हैं।

यूं तो लोग कहकर भी मुकर जाते हैं,
पर पापा वो हैं जो बीन कहे ही सब कर जाते हैं।

बाहर से सख्त, भीतर से नर्म होते हैं,
पापा वो हैं जो बच्चो में फर्क नहीं करते हैं।

मुश्किलों की कड़ी धूप अकेले ही सहते हैं,
और सुख की ठंडी छांव हमें देते हैं।

मेरी खुशी मेरी मुस्कान ही उनकी पहचान है,
जिसके पीछे उनका त्याग तपस्या रूपी वरदान है।

आंखों में मेरे सजाए उन्होंने अपने सपने हैं,
पूरा जिनको करूंगी यह मेरे बस में है।

सर्व संस्कार, ज्ञान, गुरु सम्मान उन्होंने सिखलाया है,
जीवन पथ पर अग्रसर होऊं मैं कैसे यह भी बताया है।

पिता जिंदगी का अटूट विश्वासी धागा है,
उनकी बेटी हूं मैं इस पर गर्व उनसे भी ज्यादा है।

इप्शिता तिवारी

कक्षा : ७/अ

आओ चलें

आओ चलें हम स्कूल मिलकर,

वहां बनेंगे अच्छे बच्चे पढ़कर

दोस्तों के साथ मैदान में जाकर,

खुब मस्ती करेंगे खेल कर ।

मगर कोरोना आया चलकर,

कहा अब नहीं रहोगे मिलकर

वरना तुम्हारे शरीर के अंदर घुसकर,

करूंगा तुम्हें बीमार।

मगर ज़माना बदला है,

मोबाइल भी आज अपना है

मोबाइल ने पढ़ना सिखाया,

ऑनलाइन क्लासेज करवाया ।

समन्वित महापात्र

कक्षा 6C

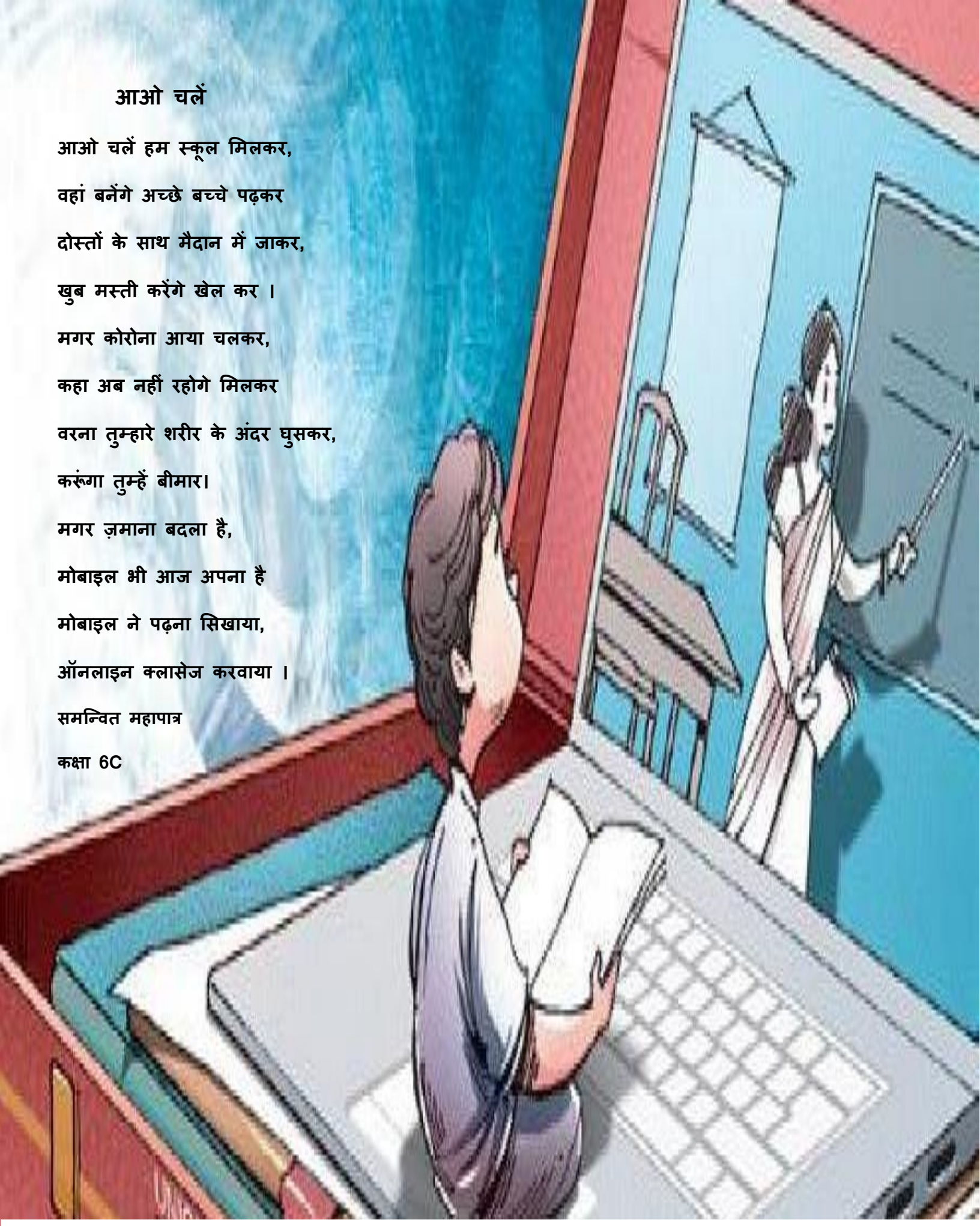

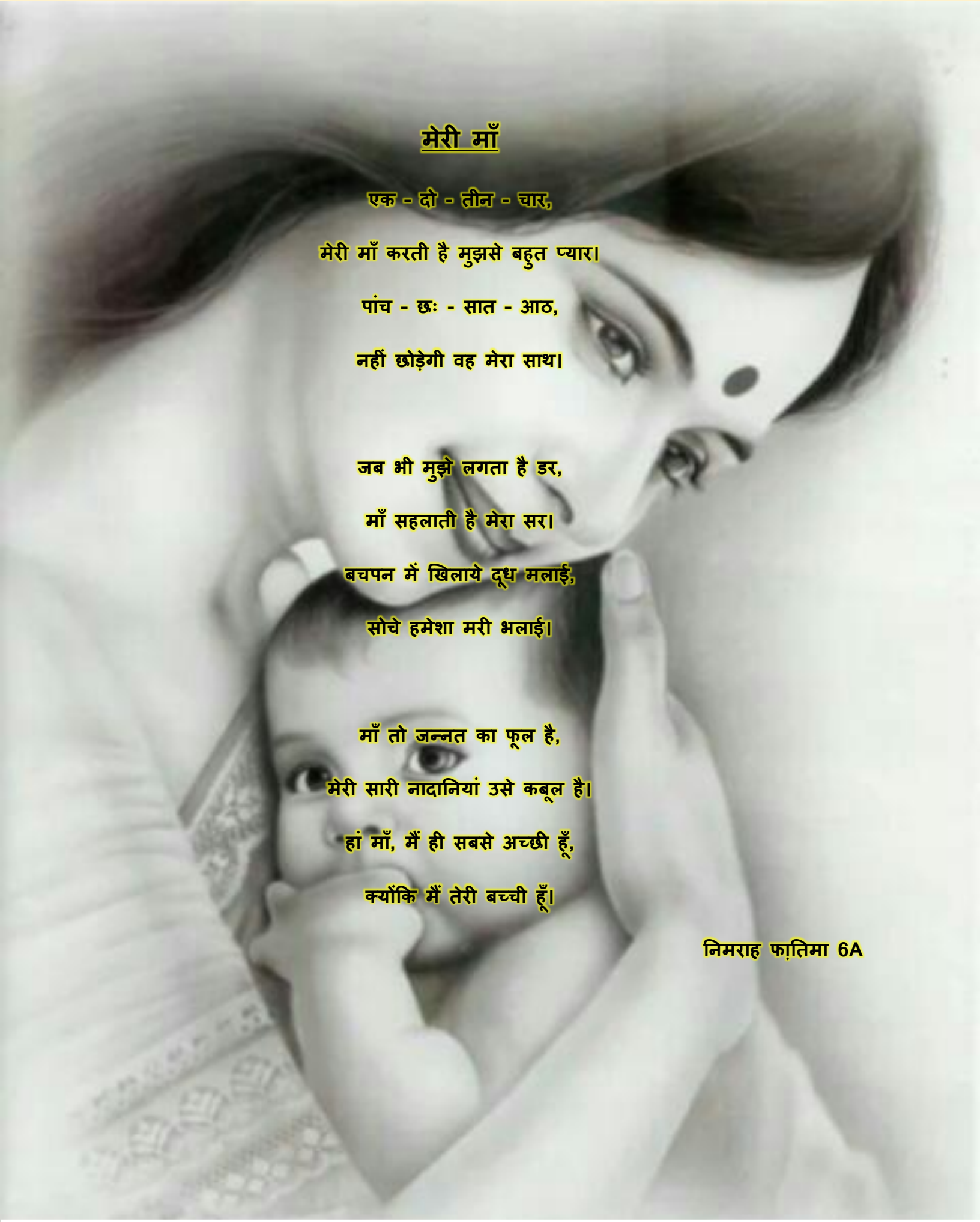

मेरी माँ

एक - दो - तीन - चार,

मेरी माँ करती है मुझसे बहुत प्यार।

पांच - छः - सात - आठ,

नहीं छोड़ेगी वह मेरा साथ।

जब भी मुझे लगता है डर,

माँ सहलाती है मेरा सर।

बचपन में खिलाये दूध मलाई,

सोचे हमेशा मरी भलाई।

माँ तो जन्नत का फूल है,

मेरी सारी नादानियां उसे कबूल है।

हां माँ, मैं ही सबसे अच्छी हूँ,

क्योंकि मैं तेरी बच्ची हूँ।

निमराह फ़ातिमा 6A

	1	8			2	3		4
		3	5					
5	2	4	8	9				
1		5		7		4		6
		7				9		
2		9		4		5		8
				8	9	6	4	3
					7	2		
3		1	6			7	8	

- सुडोकू खेल में पहले से बॉक्स में कुछ संख्याएँ दी गई होती है जिसमें 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए होते है।
- इसमें कुछ बॉक्स खाली भी होते है जिन्हें आपको भरना होता है।
- कोई सा भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए।
- एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

नीचे दिए गए शब्दों को ढूँढिए :

- कलम
- गमला
- ओखली
- औरत
- तबला
- वचन
- दावात
- शरीर
- हाथी
- साथ

यु	अ	नु	द	ध	क	ठ	श	प
मा	ष	ची	र	अ	ल	पू	टि	ति
ल	ओ	सी	ही	ग	म	ला	हा	सु
मै	डे	ख	थी	म	नू	से	ई	व
न	मो	हा	ली	चु	व	च	न	य
री	श	की	नि	औ	धा	ला	खा	श
सा	थ	दे	जो	र	ब	छ	द	री
औ	ज	दा	वा	त	से	ठी	अं	र
न	श	ओ	र	मी	पे	त्र	ड	गि

परिस्थिति से जीत

यह कहानी एक साल की बच्ची की है जिसका नाम चित्रा था। चित्रा पढ़ने 11 में बहुत तेज़ थी। वह अपने कक्षा में अव्वल आती थी लेकिन उसके घर की स्थिति , ठीक नहीं थी। चित्रा की मां घर पर रहती थी और उसके पिता छोटे से खेत में काम करते थे। एक बार चित्रा के स्कूल में एक प्रतियोगिता हुई थी जिसमे चित्रा तहे दिल से भाग लेना चाहती थी लेकिन पैसों की कमी होने के कारण वह उसमे भाग न ले सकी बस इस घटना के बाद चित्रा ने ठान लिया था कि वह परिस्थिति , को अपने सपनो में बाधा नहीं डालने देगी। कुछ दिनों बाद एक चित्रा के स्कूल में एक और प्रतियोगिता आयोजित हुई और इस बार उस प्रतियोगिता में भाग लेने के पैसे नहीं लगती यह जानकर चित्रा बहुत खुश हो गई। उसने इस प्रतियोगिता में अव्वल आने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया और क्योंकि हर बार मेहनत करने पर सफलता मिलती है चित्रा को प्रथम स्थान ,हासिल हुई और उसे इनाम के तौर पर कुछ पैसे मिलेजिससे उसने अपने माता पिता की मदद की। ,

स्वास्तिका सौम्या

कक्षा -8/F

कौन सुखी

न माँगे धन,
न माँगे तन
न चाहिए लोभ,
न करना जश्न |
हे भगवान एक ही विनती
भर दो माँ का स्थान ||

न चाहिए घर,
न चाहिए जमीन
न चाहिए खाना
न करना कुछ काम |
हे भगवान एक ही विनती
भर दो माँ का स्थान ||

न चाहिए जल
न चाहिए हवा
न चाहिए स्वर्ग,
न चाहिए जीवन |
माँ को लाकर मेरे जीवन में
सुख भर दो हे राम ||

मेरे पास सब कुछ है,
फिर भी मै व्यसन मे हूं ।
माँ मेरे साथ नहीं
आज मैं दुखी हूं

यह सब उनकी देन है,
मेरा कुछ नहीं ।
हे प्रभु ये तेरी कैसी लीला
मैं आज व्यसन हूँ ॥

कैसे वह चिंता करती थी,
कैसे वह मुसकुराती थी |
कैसी उनकी जोश थी,
कैसी वह मेहनती थी ||

मुझसे ज्यादा वह सुखी,
जिसकी माँ जींदा है होती ॥

अगस्त्य आदित्य

कक्षा - 8/F

शब्द निर्झर

चित्र देखकर आपके मन में जो भी भाव उत्पन्न हो रहे है , उस पर कविता या कहानी लिखें और इस ईमेल- nayisubahmagazine@gmail.com पर भेज दे :

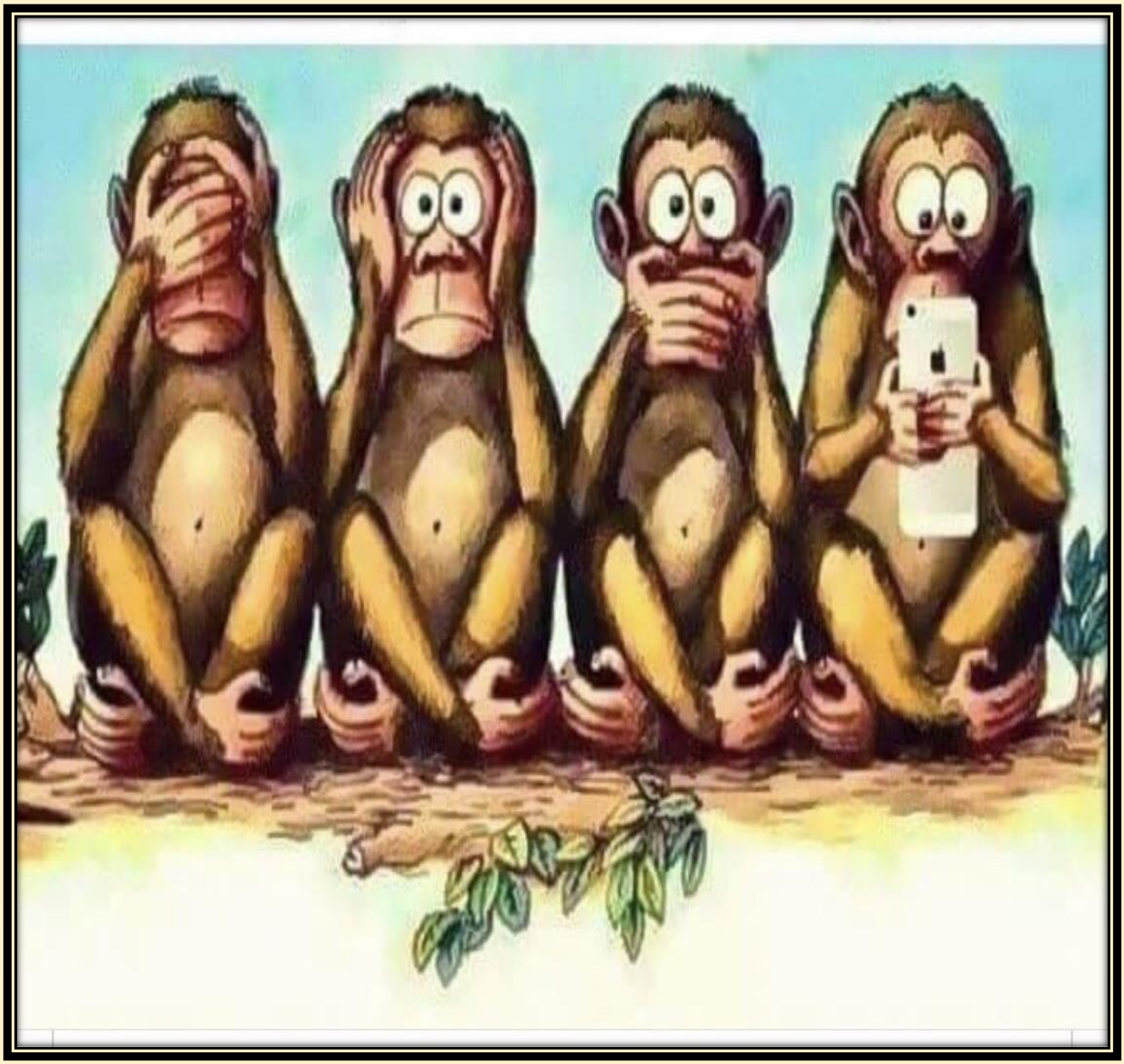

मूर्ख किसान

एक बार की बात है, एक किसान था जिसके पास मुर्गी का खेत था, एक रात उसने कुछ आवाजें सुनी, लेकिन उसे उसकी ज्यादा परवाह नहीं थी, अगली सुबह उसने देखा कि सब मुर्गियों सोने के अंडे दे रही हैं, तो किसान हैरान रह गया। सोने के अंडे ने किसान और उसकी पत्नी को उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराया। किसान और उसकी पत्नी बहुत दीनो तक खुश रहे। लेकिन, एक दिन, किसान ने मन ही मन सोचा, "हम हर मुनियों से एक दिन में सिर्फ एक अंडा क्यों ? हम उन सभी को एक साथ क्या नहीं ले सकते और बहुत सारा पैसा कमा सकते हैं?" किसान ने अपनी पत्नी को अपना विचार बताया और वह मूर्खता से मान गई। फिर अगले दिन, जैसे ही मुर्गियों ने अपना सोने का अंडा दिया, किसान तेज चाकू ले कर गया। उसने मुर्गियों को मार डाला और उनके सभी सोने के अंडे खोजने की उम्मीद में उनका पेट खोल दिया। लेकिन जैसे ही उसने पेट खोला उसे केवल मॉस और खून ही मिला। किसान को जल्दी ही अपनी मूर्खतापूर्ण गलती का एहसास हुआ और वह अपने खोए हुए संसाधन पर रोने लगा । जैसे-जैसे दिन बीतते गए, किसान और उसकी पत्नी गरीब और गरीब होते गए।

कहानी का नैतिक है:- **हमें किसी चीज का लालच नहीं करना चाहिए।**

मंजीत रंजन श्रीवास्तव
कक्षा - 7/C

परछाईयों की कलाकार

यह कहानी है एक ऐसी लड़की कि है जिसका नाम ही कहानी है। कहानी एक ऐसे परिवार में पैदा हुई थी जिस में हर कोई बड़े ओहदे पर था । हर कोई पढ़ - लिखकर बड़े - बड़े अफ़सर बन चुका था । वे सब यही चाहते थे कि कहानी भी पढ़ - लिखकर कुछ बन जाए । लेकिन कहानी कलाकार बनना चाहती थी । वह हाथ की परछाइयों से तरह - तरह के जानवरों वाहन और मनुष्य का चित्रण करती । अर्थात वर्क परछाई की कलाकार बनना चाहती थी । फैंसी अच्छा उसने कभी किसी से व्यक्त नहीं की । वह डरती थी कि कहीं कोई उसे डांट न दे । इसका परिणाम यह हुआ कि उसे पढ़ाई से नफरत होने लगी और उसका आत्मविश्वास कमजोर हो गया । वह चिड़चिड़ी होने लगी । हर छोटी से छोटी बात पर गुस्सा हो जाती । जब उसे आभास हुआ कि उसे सब कुछ खुद करना होगा तब वह शांत हो गई । वो कई दिनों तक सोच - विचार करती रही । तब उसने यह तय किया कि जब तक वह अपने दम पर कुछ करने लायक नहीं हो जाती वह अपने विचार विमर्श नहीं करेगी । वह सबके सामने तो पढ़ाई करती परंतु समय निकाल कर अवश्य अभ्यास करती । जब उसने पढ़ाई पूरी की तो ऐसा पद खोजा जिससे वह कभी भी इस्तीफा दे सके ।जब उससे नौकरी मिली तो उसके परिवार वाले बहुत खुश हुए । लेकिन कहानी तो उस वक्त का इंतजार कर रही थी जब वह इस्तीफा देने वाली थी। उसने नौकरी करने के 3 साल बाद ही इस्तीफा दे दिया । उसके नौकरी छोड़ने के कदम से उसके परिवार वालों से नाराज हो गए और उसका आगे साथ ना देने का फैसला किया । उसने 3 सालों में इतने पैसे इकट्ठा कर लिए कि वह एक अपना 'शो 'टीवी पर शुरू कर सके । जब उसने यह सब करना शुरू किया तब कोई उसका साथ देने वाला नहीं था ।लेकिन उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा । उसने मेहनत की और अपने परछाइयों को शो में समाज की गंभीर समस्याएं दिखाने की कोशिश की । उसकी मेहनत और सोच के कारण उसका शो दर्शनीय बन गया और 4 सालों के अंदर - अंदर उसके शो को पुरस्कृत किया गया । उस दिन उसने सब को समझा दिया कि पढ़ाई के अलावा भी कोई कार्य मेहनत से किया जाए तो उतनी ही प्रसिद्धि मिलेगी जितनी पढ़कर मिलती है ।

ऋद्धि रंजन

7c

1. तीन अक्षर का मेरा नाम । उल्टा सीधा एक समान पहेली का जवाब दीजिए?
2. कटोरे पर कटोरा, बेटा बाप से ज्यादा गोरा।
3. अंधेरे में बैठी है एक रानी, सिर पर है आग और तन में है पानी।
4. लाल डिब्बे में हैं पीले खाने, खानों में है लाल-लाल मोती के दाने।
5. बिना पैर के चलती रहत, हाथों से अपने मुंह को पोंछती, बताओ कौन?
6. बाहर से हरा अंदर पीले मोती के दाने, लोग हैं इसके दीवाने।
7. वैसे वह खराब होता है। फिर भी लोग उसे पीने की सलाह देते है, बताओ क्या है?
8. ऐसा क्या है, जो आपका अपना है, लेकिन उसका इस्तेमाल दूसरे आपसे ज्यादा करते हैं?
9. दो लड़के और दोनों के रंग एक जैसे। अगर एक बिछड़ जाए, तो दूसरा काम न आए।

1.जहाज 2.नारियल 3.मोमबत्ती 4.अनार 5.घड़ी 6.भुट्टा 7.गुस्सा 8.आपका नाम 9.जूते

<u>जल है तो कल है ।</u>

जब वर्षा की बूंदें , धरती को चूमने पर थी ,

तब लोगों का उत्साह का कोई वर्णन नहीं था ।

लेकिन ये उत्साह भूलने पर है ,

क्योंकि ये जग ये दुनिया जल खोने पर है ।

पुरे संसार में जल का है कोलाहल ,

किसी के पास न जल है, न इससे किसी का कल है।

जैसे होता है हर समस्या का निवारण ।

है इंसान इस कोलाहल का कारण ।

है इसकी चाहत हर प्यासे की प्यास बुझाने की ,

है इसकी आस हर पौधे को सींचने की ।

इसकी है ये अभिलाषा अनंत अपार ,

इससे ही है पूरा संसार ।

अब तड़पता है क्यों तू इंसान ,

जब तूने कर दिया ये नुकसान ।

मर जाएंगे पशु - पक्षी यू ऐसे ही ,

अब तो सुधर जा ऐ इंसान ,

मत कर खुद अपना नुकसान । ।

- विदयांशू भारती , 7 ब

अगला अंक